धर्मशास्त्रीय मनन

मरियम का स्थान मसीही धर्मशास्त्र में अत्यन्त विशिष्ट और आदरणीय है। यद्यपि प्रोटेस्टेंट परंपराएँ उन्हें “सह-उद्धारक” (co-redemptrix) या “मध्यस्थ” (mediatrix) जैसे शीर्षक नहीं देतीं, फिर भी वे उनके उद्धार-इतिहास में अनमोल योगदान को मान्यता देती हैं — क्योंकि उन्हीं के द्वारा मसीह संसार में आए, और वे विनम्र विश्वास का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

नीचे कुछ बाइबिलीय और धर्मशास्त्रीय बिन्दु विचारार्थ दिए गए हैं:

1. उनकी विनम्रता और आज्ञाकारिता
जब स्वर्गदूत ने मरियम से कहा कि वह पवित्र आत्मा से गर्भवती होगी (लूका 1:26–38), तो मरियम ने उत्तर दिया —
“देखो, मैं प्रभु की दासी हूँ; जैसा तूने कहा है वैसा ही मेरे साथ हो।” (लूका 1:38)
उनका यह “हाँ” परमेश्वर की इच्छा के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता का आदर्श उदाहरण है।

2. स्त्रियों में धन्य
घोषणा के समय स्वर्गदूत ने उन्हें नमस्कार करते हुए कहा,
“हे अनुग्रह से परिपूर्ण, प्रभु तेरे साथ है।” (लूका 1:28)
बाद में, जब एलिज़ाबेथ पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुईं, तो उन्होंने कहा, “स्त्रियों में तू धन्य है, और तेरे गर्भ का फल भी धन्य है।” (लूका 1:42) मरियम का धन्य होना उनके अपने गुणों से नहीं, बल्कि परमेश्वर की कृपा से है।

3. मैग्निफिकैट — भविष्यद्वाणी भजन
एलिज़ाबेथ के उत्तर में मरियम का गीत, जिसे मैग्निफिकैट कहा जाता है (लूका 1:46–55), इस बात का गवाह है कि परमेश्वर दीनों को ऊँचा उठाता है और इस्राएल से अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है।
यह गीत परमेश्वर के न्याय और दया के प्रति उनकी गहरी समझ को प्रकट करता है।

4. देहधारण (Incarnation) में उनकी भूमिका
मरियम के द्वारा “वचन देहधारी हुआ” (यूहन्ना 1:14)।
उनकी स्वेच्छा से सहभागिता उन्हें परमेश्वर की उद्धार-योजना का केन्द्रीय पात्र बनाती है।
सन् 431 ईस्वी में एफिसुस की परिषद ने उन्हें थियोतोकोस (– “परमेश्वर की
जननी”) घोषित किया ताकि यह सत्य सुरक्षित रहे कि यीशु एक ही व्यक्ति हैं — पूर्णतः परमेश्वर और पूर्णतः मनुष्य।

5. क्रूस के नीचे उनकी शिष्यता
मरियम, सुसमाचारों के अनुसार, यीशु की क्रूस पर मृत्यु के समय उपस्थित थीं (यूहन्ना 19:25–27)।
वहाँ यीशु ने उनसे कहा, “हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है,” और शिष्य से कहा, “देख, यह तेरी माता है।”
इस घटना को इस रूप में भी समझा गया है कि मरियम को कलीसिया की माता के रूप में सौंपा गया।

6. विश्वासियों के लिए उनका उदाहरण
मरियम ने विश्वास में जीवन बिताया और आशा में प्रतीक्षा की।
उन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा किया, भले ही परिस्थितियाँ असम्भव लगती थीं (रोमियों 4:18–21 की तुलना करें)।
वह धैर्य, विश्वास और विनम्रता की आदर्श हैं — परन्तु उनकी आराधना नहीं की जाती।

7. मध्यस्थता और सम्मान (कैथोलिक व ऑर्थोडॉक्स परंपराओं में)
जहाँ प्रोटेस्टेंट परंपरा मरियम से प्रार्थना करने से परहेज़ करती है, वहीं अन्य परंपराएँ (कैथोलिक और ऑर्थोडॉक्स) उनसे यह निवेदन करती हैं कि वे विश्वासियों के लिए मध्यस्थता करें, जैसे हम अन्य मसीही भाइयों से प्रार्थना करने को कहते हैं।
यह उपासना नहीं है — क्योंकि उपासना केवल परमेश्वर की है (निर्गमन 20:3–5; मत्ती 4:10)।

8. पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण की आशा
कई परंपराएँ मानती हैं कि मरियम अपने सांसारिक जीवन के अन्त में स्वर्ग में उठा ली गईं।
यद्यपि बाइबल में इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं है, फिर भी यह शिक्षा इस विचार के अनुरूप है कि मृत्यु अंततः विजित की जाएगी (1 कुरिन्थियों 15:54)।

9. कलीसिया की आराधना और भक्ति में मरियम की भूमिका
कलीसिया ने सदियों से मरियम का विशेष आदर किया है — उद्धार का स्रोत नहीं, बल्कि उस स्त्री के रूप में जिसने उद्धारकर्ता के कार्य में अनोखी भागीदारी की, और जो आज भी हमें मसीह की ओर इंगित करती है।

उदाहरण (सारांश अनुवाद)

हममें से बहुत से लोग विश्वास करते हैं कि मरियम — हमारे प्रभु यीशु मसीह की माता — एक अत्यन्त विशिष्ट और धन्य स्त्री थीं। यह कथन एक केंद्रीय मसीही विश्वास को प्रकट करता है: मरियम की धन्यता उनकी अपनी नहीं, बल्कि परमेश्वर की उस कृपा में है, जिसके द्वारा उन्हें उसके पुत्र को जन्म देने के लिए चुना गया।

पौलुस लिखते हैं, “क्योंकि सब वस्तुएँ उसी से, उसी के द्वारा, और उसी के लिए हैं।” (रोमियों 11:36)
और यह भी कि “हम मसीह में हर आत्मिक आशीष से धन्य किए गए हैं।” (इफिसियों 1:3)
मरियम का विशेष बुलावा था — उस जन को संसार में लाना, जो सब आशीषों का दाता

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp